Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

Journalism

KEYWORDS : शिलालेख, शैलचित्र यानी रॉक पेंटिंग्स, ऐतिहासिक काल, जनसंचार माध्यम

Aitihasic Jansanchar Madhyam: Shilalekh aur Shail Chitra

ऐतिहासिक जनसंचार माध्यम: शिलालेख और शैल चित्र

Dr. Subodh Kumar

Associate Professor & Convener, Department of Journalism, Vardhman Mahaveer Open University, Kota (Raj.)

ABSTRACT

आज हमें अखबारों, रेडियो, टीवी और इंटरनेट प्रायोजित सोशल मीडिया के द्वारा अनेक सूचनाएं और संदेश प्राप्त हो जाते हैं। आधुनिक युग के इन जनसंचार मध्यमें में दिनोंदिन नवाचार हो रहे हैं। लेकिन विचार कीजिए जब प्रागैतिहासिक काल में ज्ञानव सभ्यता सृजन का दौर चल रहा था, तब संचार की प्रक्रिया क्या थी, वास्तव में उस वक्त पहाड़ों और गुफाओं में रॉक पेंटिंग्स बनाई जाती थीं। दीवारों पर कुछ भी उकेरने और अपनी बात कहने का चलन था, उसी से आपस में लोग संप्रेषित करते थे और अपने विचारों को दूसरे तक पहुंचाते थे। इतिहास की पर्तें खोलते हैं तो पता चलता है कि मौर्य शासनकाल के अलावा कई अन्य राजाओं ने भी अपने संदेशों को दूसरों तक पहुंचाने के लिए शिलालेखों का सहारा लिया। प्रस्तुत शोध पत्र में इस बात की पड़ताल की गई है कि किस प्रकार शैलचित्र यानी रॉक पेंटिंग्स और खासकर मौर्य शासनकाल के शिलालेखों ने जनसंचार माध्यमों के रूप में अपनी भूमिका निभाई और आज भी किसी न किसी रूप में वॉल पेंटिंग्स के अलावा शिलापटों को लिखने और लगाने का क्रम जारी है।

भूमिका-

आधुनिक युग तकनीक का है और हमें अपने आसपास जनसंचार माध्यमों के रूप में अखबारों, टीवी, रेडियो के अलावा सोशल मीडिया का संजीदा फोरम मिला हुआ है जो आपसी संप्रेषण के लिए सर्वोपयुक्त माध्यम है। वैसे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो मानव सभ्यता के विकास के क्रम से ही संप्रेषण की प्रक्रिया में भी काफी नवाचार हुए हैं। मनुष्य ने पत्थरों को अपना हथियार बनाया, उसे रगड़ा तो आग निकली और नुकीला बनाया तो हथियार बन गए, उससे शिकार किया और अपना पेट भरा। इसके बाद आपसी संवाद आया तो मनुष्य ने पत्थरों की मदद फिर ली और उसी के माध्यम से गुफाओं और दीवारों पर चित्रों को उकेरने का काम किया। लिपि के आविष्कार के बाद उसे भी दीवारों पर अंकित किया गया। आज के युग में जब भी कहीं किसी ऐतिहासिक महत्व के किले या टीले की खुदाई होती है तो अनेक प्रकार की चीजें बरामद होती हैं और इसके अलावा पेंटिंग्स और शिलापटों को भी निकाला जाता है जिस पर किसी न किसी भाषा की छाप मिलती है और कोई संदेश उकेरा रहता है।

मौर्यकाल के शिलालेख-

प्राचीन इतिहास में इस बात का उल्लेख है कि मौर्य शासनकाल में काफी बड़े पैमाने पर शिलालेखों के माध्यम से संदेशों को संचारित करने का काम किया गया था। ये शिलालेख केवल भारत में ही नहीं वरन विदेशों में भी जनसंचार का प्रबल माध्यम बने। मौर्य सम्राट अशोक के बारे में इतिहास में केवल शिलापटों पर ही जानकारियां उकेरी गईं। शिलालेखों के माध्यम से जानकारियां देने की प्रेरणा सम्राट अशोक को ईरान के शासक डेरियस से प्राप्त हुई। उनके शासनकाल के करीब ४० शिलालेखों के बारे में इतिहासकारों ने जानकारियां जुटाई हैं।

सम्राट अशोक के प्रथम श्रेणी के शिलालेखों और स्तंभ लेखों को दो उप श्रेणियों में बांटा गया है। ये शिलालेख गुजरात राज्य के मानसेरा और गिरनार, उड़ीसा के पुरी जिले के धौली, महाराष्ट्र के शाहबाजगढ़ी और सोपारा, उत्तराखंड के कालसी, उड़ीसा के गंजाम जिले में जौगड़ तथा आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले के येरागढ़ी में पाए गए हैं। कुछ अन्य लघु शिलालेख मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले के ब्रम्हगिरी व रूपनाथ, बिहार के सासाराम तथा कर्नाटक के सिद्धपुर आदि में भी पाए गए हैं।

दूसरी श्रेणी के शिलालेखों में राजस्थान के जयपुर जिले के बैराठ, कर्नाटक के रायचूर जिले के कोपबाल व मस्की तथा येरागुड़ी के अलावा अफगानिस्तान के जलालाबाद व कंधार के निकट भी लघु शिलालेख पाए गए हैं।

तीसरी श्रेणी में स्तंभलेख रखे गए हैं, जो दिल्ली की अमर कालोनी, इलाहाबाद, लौरिया, नंदगढ़, रामपुरवा तथा लौरिया-अरराज में पाए गए हैं। लघु स्तंभ लेख सारनाथ, साही निग्लीव आदि में मिले हैं। शिलालेखों में ब्राम्ही लिपि का प्रयोग किया गया है। सम्राट अशोक अपने राज्य के बारे में उच्च जीवन आदर्शों को लोगों के सामने रखना चाहते थे और इसके लिए वह अपने संदेशों के माध्यम से प्रचार-प्रसार कर रहे थे तथा शिलालेखों और स्तंभ लेखों का सहारा ले रहे थे। सम्राट अशोक की खासबात थी कि उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया, उसके बारे में खूब प्रचार-प्रसार किया, लेकिन उसे अपनाने के लिए कभी किसी पर जोर जबरदस्ती दबाव नहीं डाला।

अशोक ने बौद्ध धर्म के अलावा अपने विचारों और सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए शिलापटों और स्तंभलेखों का सहारा लिया। उन्होंने इसके लिए धम्म महापात्रों को काम पर भेजा। दूसरे और सातवें स्तंभ लेखों में अशोक ने धम्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि यह एक प्रकार की साधुता है, कल्याणकारी काम करना है, मृदुता है, दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता, दया-दान और शुचिता है। अशोक ने धम्म का प्रचार करने के लिए कई कदम उठाए। उसने स्वयं के अलावा कर्मचारियों को भी मानव जाति के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। जीवों का वध रोकने के लिए अशोक ने अपने प्रथम शिलालेख में ही विज्ञप्ति जारी की। उस वक्त राजकीय रसोई में भी काफी पशु मारे जाते थे, लेकिन अशोक ने धीरे-धीरे इसे भी बंद करा दिया।

सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल के दौरान सभी धर्मों का आदर किया। अशोक के सातवें शिलालेख में इस बात का उल्लेख है कि-सभी संप्रदाय के लोग सभी स्थानों पर रह सकते हैं, क्योंकि सभी आत्मसंयम और भावशुद्धि चाहते हैं। इसके अलावा अशोक ने अपने १२वें शिलालेख में घोषणा की कि सभी संप्रदायों के गृहस्थ और श्रवणों को दान आदि के द्वारा सम्मान किया जाएगा। उसने लिखवाया कि महाराज दान और मान को इतना महत्व नहीं देते जितना इस बात को देते हैं कि सभी संप्रदाय के लोगों में सारवृद्धि हो और इसके लिए उन्हें एक मूलमंत्र का सहारा लेना पड़ेगा यानी कि वाणी पर संयम। अशोक ने कहा कि लोगों को अपने संप्रदाय के अलावा दूसरे संप्रदाय की भी प्रशंसा करनी चाहिए। मौर्य शासनकाल में ब्राम्ही लिपि के अलावा खरोष्ठी, कलिंग, बांग्ला, तेलगू, कन्नड़, संस्कृत, प्राकृत व देवनागरी भाषाओं में भी शिलालेख पाए गए हैं। अशोक के कई शिलालेख नई दिल्ली के संग्रहालय में भी रखे गए हैं। अशोक ने अपनी धर्म यात्राओं में बोधगया, लुम्बिनी और निगली सागर का भ्रमण किया। इन जगहों पर उन्होंने लोगों से संपर्क कर अपने धर्म और शासन के बारे में अवगत कराया।

शैल चित्र यानी रॉक पेंटिंग्स का दौर-

रॉक पेंटिंग के माध्यम से लोग प्रागैतिहासिक काल में अपनी मौलिक अभिव्यक्ति को दूसरों तक पहुंचाते थे। दुनिया में सबसे पहले उत्तरी स्पेन में रॉक पेंटिंग्स के प्रमाण मिलते हैं। यह घटना ४० हजार वर्ष पहले की बताई जा रही है। दूसरे फ्रांस की चैवेट गुफा के अंदर चित्रों के रूप में जानकारियों का भंडार समाया हुआ है। आस्ट्रेलिया में भी शैलचित्रों की गुफाएं पाई गई हैं। इसके अलावा दक्षिण अफ्रीका, उत्तरी-पश्चिमी सोमालिया, उत्तरी अफ्रीका, फ्रांस, स्पेन, भारत में भीमवेटका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, दक्षिण-पूर्व एशिया के थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया एवं बर्मा आदि जगहों पर शैलचित्रों का वृत्तांत मिलता है।

पूरे विश्व में शैलचित्र ४० हजार से १० हजार वर्ष पूर्व के मिले हैं। इस काल के लोगों के पास अपना स्थापत्य, कारीगरी, पेंटिंग्स, संगीत कला को दर्शाने की रूचि थी। ये लोग चट्टानों में गुफाएं बनाने की कला भी जानते थे, जिनमें चित्रों को बनाने के बाद उनमें रंग भरने की प्रथा थी। ये लोग दीवारों के अलावा छतों का प्रयोग भी चित्रों को बनाने के लिए करते थे। इनमें से ज्यादातर पेंटिंग्स में पशु-पक्षियों के अलावा शिकार का वर्णन किया जाता था। इसके बाद आगे चलकर इसमें मानव की कलाकृतियों के अलावा तत्कालीन समाज की सभ्यता और संस्कृति का उल्लेख किया जाने लगा। आयताकार आकृतियों के अंदर छोटे-छोटे चित्रों को बनाया जाता था। कुछ जगहों पर आयताकार कैनवास तैयार किया जाता था और उसके अंदर आकृतियों का निर्माण किया जाता था। ऐसा करने के पीछे माना जाता है कि उस वक्त की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी दी जाती थी। ऐसा जनविश्वास था कि पेंटिंग्स के माध्यम से उस वक्त बड़ों के प्रति सम्मान और आदर प्रदर्शित किया जाता था। गुफाओं में खासकर लाल और पीले रंगों का प्रयोग किया जाता था। भारत में भीमवेटका की गुफाओं के अंदर चट्टानों पर शैलचित्रों की भरमार है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ में भी एलियंस की दस हजार साल पुरानी पेंटिंग पाई गई है। महाराष्ट्र में अजंता की गुफाओं के चित्रों को विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया है। इसके अलावा राजस्थान के कोटा के आलनियां और कोटा-बूंदी जिलों के कई स्थानों पर शैलचित्रों के प्रमाण मिल रहे हैं।

चित्रकला शैली-

विद्वानों और इतिहासकारों का मानना है कि शैल चित्रों के माध्यम से भावनाओं की जो अभिव्यक्तियां चट्टानों और गुफाओं में दर्ज हुईं उसी से आगे चलकर चित्रकला शैली का विकास हुआ। आज चित्र चाहे दीवार पर बनाए जाते हों या फिर घरों, मंदिरों और मठों में, चित्रकला के माध्यम से ही अभिव्यक्ति की जा रही है। देश में खासकर कांगड़ा शैली और मधुबनी शैली को चित्रकला के नायाब नमूनों में गिना जाता है। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं तो यहां जब रियासतों का दौर था, तो चित्रकला को खूब निखारने का काम किया गया। इन्हीं चित्र शैलियों के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति की गई। राजस्थान में रियासतों के हिसाब से बूंदी शैली, मेवाड़ी शैली, जोधपुर शैली, जयपुर शैली, किशनगढ़ शैली के नाम से जाना गया है। ये चित्र तत्कालीन समाज के परिवेश को रेखांकित करते थे, जिसमें राजशाही की शान, जन-जीवन के अलावा मनोरंजन, पर्व, उत्सवों के आयोजन तथा सामान्य जीवन की सभ्यता और संस्कृति का खाका खींचा जाता था। आज भी उपरोक्त सभी शैलियों की छाप पेंटिंग्स के माध्यम से मिल रही है।

निष्कर्ष-

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जनसंचार माध्यमों की इस कड़ी में शिलालेख और शैलचित्रों की एक लंबी फेहरिस्त शामिल है। चित्रकला के विकास की रेखाएं भी इसी पर्त से निकलती प्रतीत होती हैं। यह माना जा सकता है कि आज तकनीक हावी और तरह-तरह के संप्रेषण माध्यम पूरे समाज को हर पल नई नई जानकारियां दे रहे हैं, लेकिन ऐतिहासिक परिवेश की पर्तों की पड़ताल से पता चलता है कि दीवारों और गुफाओं के अलावा पत्थरों पर उकेरी गई भावाभिव्यक्ति की आज तक मिसाल दी जा रही है। सम्राट अशोक द्वारा शिलालेखों, स्तंभलेखों और गुहालेखों के माध्यम से अपने धर्म और कर्म के प्रचार की जो इबारत तब खींची गई थी, वो आज के परिवेश में अब भी कायम है। वर्तमान में वॉल पेंटिंग के अलावा घरों और महत्वपूर्ण जगहों की दीवारों, मंदिरों, मठों के अलावा सार्वजनिक महत्व के प्रतिष्ठानों के बाहर ऐसी ही जानकारी भरी पेंटिंग्स का सहारा लिया जाता है जो लोगों की पहुंच में हों। ग्रामीण परिवेश की बात करें तो स्वास्थ्य और चिकित्सा संबंधी जानकारियों के अलावा सार्वजनिक महत्व की सूचना को आज भी दीवारों पर लिखकर समझाया जाता है। चुनावों के समय जनमानस को लुभाने के लिए राजनीतिक दल अपने नारे और वादे गांवों की

Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 • ISSN No 2277 - 8179

दीवारों पर लिखवा देते हैं। हालांकि कड़ी आचार संहिता के इस दौर में इन पर प्रतिबंध रहता है, लेकिन अगर कोई लिख भी देता है तो साफ-सफाई का जिम्मा भी उसी का होता है। ऐसे में दीवारों पर लिखने, चित्र उकेरने और प्रौढ़ शिक्षा जैसे कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में ऐसे ही जनसंचार माध्यमों का सहारा लिया जा सकता है, जो वास्तव में कम खर्चीले और तीव्र पहुंच वाले होते हैं।

REFERENCE

पुस्तकें मीडिया आईईसी फोरम, (२०१७), कोटा, कृष्णा मानव विकास संस्थान। | Bakshi S. R., Mittra Sangh,2003, ncient Indian History, Commonwealth Publishers. | Key John, 2010, India History, Harper Collins Publishers. | Kaur Dr Gagandeep, (2014), History Of Indian Sculpture, | | | वेबसाइट लिंक | | hindi.sputniknews.com/hindi.ruvr.ru/2014š07š16/274690299/ | navbharattimes.indiatimes.com | ispattimes.com/2014/11/7880/ | www.bhaskar.com/news/c-16-719114-NOR.html | aajkaitihas.blogspot.com/2011š09š01šarchive.html